के लिये पूरा पौधा निकाल लिया जाता है। इसकी जड़ 2 सेमी. ऊपर से तना काट कर अलग कर लिया जाता है। जड़ों को धोकर 7-10 सेमी. लंबाई के टुकड़ों में काट लिया जाता है। फलों को तने से अलग कर सुखा कर बीज एकत्र कर लिये जाते हैं।

फसल प्राप्ति आर्थिकी

उपज प्रति हेक्ट.	-	5 क्विं. (सूखी जड़)
उपज प्रति हेक्टे.	-	50 कि.ग्रा. (बीज)
विक्रय मूल्य(बीज)	-	150 से 200 रु. प्रति कि.ग्रा.
विक्रय मूल्य(जड़)	-	50-60 रु. / कि.ग्रा.
व्यय / हेक्टे.	-	रु. 4000
आय/हेक्टे.	-	रु. 35,000
लाभ	-	रु. 31,000/हेक्टे.

•••

औषधीय एवं सगंध पौधों से संबंधित ;

- रोपणी तकनीक
- कृषि तकनीक
- पौध सामग्री की उपलब्धता
- बीज उपलब्धता
- बाजार व्यवस्था
- औषधीय निर्माणियों की मांग
- निर्माणियों एवं कृषकों में संबंध

जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर सविस्तार जानकारियाँ प्राप्त करने के लिये निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं ;

संचालक
राज्य वन अनुसंधान संस्थान,
पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.) - 482 008
फोन - (0761) 665540 फेक्स - (0761) 661304

एस.एफ.आर.आई. प्रचार पत्रिका - 26

अश्वगंधा

(विथानिया सोमनीफेरा)

जैव विविधता एवं औषधी पौध शाला

म.प्र. राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

2001

अश्वगंधा
(विथानिया सोमनीफेरा)

अश्वगंधा को असंगध के नाम से भी जाना जाता है । यह सोलेनेसी कुल का अत्यंत महत्वपूर्ण पौधा है जिसे आयुर्वेदिक व यूनानी पद्धति की दवाओं में बहुतायत से प्रयोग किया जाता है । भारत में यह पौधा गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान, पंजाब, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक आदि में पाया जाता है । मध्यप्रदेश में इसकी खेती मंदसौर जिले के मनासा, नीमच, भानपुरा तहसीलों में लगभग 3000 हेक्टे. से अधिक क्षेत्रफल में की जा रही है । अश्वगंधा का पौधा 2 फुट लंबा व घनी झाड़ीनुमा होता है । इसकी पत्तियाँ रोयेंदार, अण्डाकार व हरे रंग की होती हैं । फूल हल्के पीले रंग के व फल छोटे लाल, गोल व चिकने होते हैं जिसमें छोटे-चपटे व भूरे रंग के बीज पाये जाते हैं । इसकी जड़, सीधी, लंबी व गूदेदार होती है ।

औषधीय गुण व उपयोगी भाग

अश्वगंधा में विथेनिन व सोमनीफेरिन नामक एल्कलॉईड पाये जाते हैं । इसके बीज, फल, छाल एवं पत्तियों को विभिन्न शारीरिक व्याधियों के उपचार में प्रयुक्त किया जाता है । इसे गठिया का दर्द, जोड़ों की सूजन, पक्षाघात, रक्तचाप में उपयोग किया जाता है । इसकी पत्तियाँ त्वचा रोग, सूजन एवं घाव भरने में उपयोगी है । अश्वगंधा का सर्वाधिक उपयोग शक्तिवर्धक औषधियों में होता है ।

कृषि तकनीक

अश्वगंधा की खेती के लिये बलुई दोमट व हल्की लाल मिट्टी जिसका पी.एच. 7.5 से 8 तक हो उपयुक्त होता है । इसके लिये अच्छी जल निकासी वाली जमीन होनी आवश्यक है । यह खरीफ फसल है जिसके लिये 650-700 मि.मी. वर्षा पर्याप्त है । अश्वगंधा की जवाहर असगंध - 20 किस्म अच्छी मानी गयी है । अश्वगंधा, बीज द्वारा लगाया जाता है तथा इसकी फसल अवधि 4-5 माह है । एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिये असगंध के 10 कि.ग्रा. बीज की आवश्यकता होती है । इसकी बुआई के लिये छिड़काव विधि सर्वश्रेष्ठ मानी गयी है । हाँलाकि नर्सरी में बीज डाल कर तैयार पौध का रोपण भी किया जाता है । बीजों का छिड़काव ज्यादा घना नहीं होना चाहिये तथा पौधों में 15-20 सेमी. का अंतराल आवश्यक है । बुआई सितंबर से अक्टूबर मध्य तक की जानी चाहिये । असगंध कम पानी की फसल है इसलिये इसे माह में एक से ज्यादा सिंचाई की आवश्यकता नहीं है ।

फसल प्राप्ति

अश्वगंधा की फसल 150-170 दिन में तैयार हो जाती है । पत्तियों का सूखना व फलों का लाल होना इसका संकेत देते हैं कि फसल परिपक्व हो गयी है । इसके विदोहन